महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठलम् (कैथल)-१३६०२७, हरियाणा

(हरियाणासर्वकाराधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापितः)

परिचायिका

Prospectus

2023-24

कार्यालय- डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा (अम्बाला मार्ग), कैथल।

वर्तमान अस्थायी परिसर– महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, टीक (कुरुक्षेत्र मार्ग), कैथल- 136027

सम्पर्क सूत्र – 93500-45366, वेबसाईट- www.mvsu.ac.in

mvsumktl@gmail.com

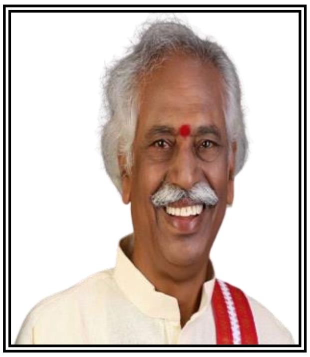

कुलाधिपति-सन्देशः

अत्यन्तमेवाह्लादकरो गौरवास्पदश्चायं विषयो वर्तते यद् हरियाणासर्वकारः संस्कृतभाषायास्संरक्षणे संवर्द्धने च कृतसंकल्पो दरीदृश्यते । संकल्पस्यास्य सम्पूर्त्तये च हरियाणासर्वकारेण 2018 तमे ईस्वीये वर्षे कपिष्ठलनगरे (कैथल) मून्दड़ीनामके ग्रामे महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापना विहिता । विश्वविद्यालयोऽसौ ज्ञानविज्ञानयो: संरक्षणाय, संवर्द्धनाय संस्कृतभाषाप्रचारप्रसारार्थञ्च कृतसंकल्पो भूत्वा न केवलं हरियाणाप्रदेशम् अपितु सम्पूर्णमेव भारतराष्ट्रं गौरवान्वितं विधास्यति। ऐतिहासिके कपिष्ठलनगरे (कैथल) संस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापनायै कैथलनगरस्य समस्तजनताभ्यो हार्दिकानि वर्धापनानि।

विश्वविद्यालयोऽयमुत्तरोत्तरं प्रगतिमार्गे अग्रेसरो भूत्वा स्वीयविशिष्टस्योद्देश्यस्य सम्पूर्त्तौ सुसफलो भवेदेतदर्थं समस्तविश्वविद्यालयकुटुम्बेभ्योऽशेषशुभकामाः ।

महामहिम बंडारूदत्तात्रेयः
कुलाधिपतिः

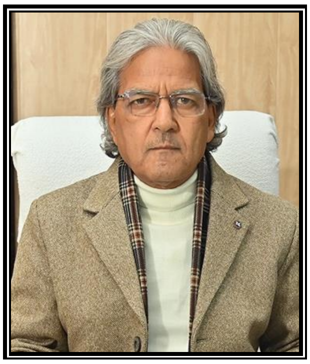

कुलपति-सन्देशः

संस्कृतभाषा भारतस्य आत्मतत्त्वरूपेण भारतीयसंस्कृतेः संरक्षिका संवर्धिका च वर्तते । संस्कृतं विना पूर्णाखण्डभारतस्य कल्पनापि गगनकुसुमसदृशी असम्भवा वर्तते । अत एव उक्तमस्ति- **"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"** अर्थात् भारतस्य प्रतिष्ठा संस्कृतेन संस्कृत्या एव जायतेऽत्र नास्ति सन्देहलेशः । अस्य सर्वजनवन्दितस्य भारतस्य आधारस्तम्भः संस्कृतमेव वर्तते नान्यत् । अतः भारतस्य सर्वविधस्य सम्पूर्णस्येतिवृत्तस्य ज्ञानं संस्कृतेन संस्कृतशास्त्रेणैव च भवितुमर्हति ।

भारतीयवैदिकसभ्यतायाः भारतीयसंस्कृतेश्च विकासः सरस्वतीनद्यास्तटे एवाभूद् । अतः ऐतिहासिकदृष्ट्या हरियाणाप्रदेशस्तथा प्रदेशस्यास्य कपिष्ठलनगरमतीव महत्वपूर्णं स्थानं विभर्ति । इयमेव प्रागैतिहासिकऋषेः कपिलस्य तपोभूमिः वर्तते । भारतीयसंस्कृतेः त्रयः कालखण्डाः स्वीक्रियन्ते, प्रथमो भारतीयवैदिककालखण्डः, द्वितीयो रामायणकालखण्डः तृतीयश्च महाभारतकालखण्डः। अनेन खण्डत्रयेणापि अस्य कपिष्ठलस्य साक्षात्सबन्धो वर्तते । वैदिककालखण्डे वैदिकसभ्यतायामस्य कपिष्ठलस्य वर्णनमवाप्यते, अपि च कृष्णयजुर्वेदे कठ-कपिष्ठलशाखापि प्राप्यते । रामायणकालस्य चर्चा क्रियेत चेत् लवकुशजन्मना सह अस्य कपिष्ठलस्य साक्षात्सम्बन्धो दृश्यते । अत्रैव लवकुशतीर्थनामकं धार्मिकस्थलमद्यापि वर्तते । महाभारतकालेन अस्य सम्बन्धः सर्वविदितो वर्तते । अस्मिन्नेव कुरुक्षेत्रे अभूतपूर्वमहाभारतयुद्धो जात आसीत् । अष्टचत्वारिंशत्क्रोशात्मकक्षेत्रोऽयं कुरुक्षेत्रनाम्ना प्रथितो वर्तते । अत्रैव भगवान् हनुमान् अर्जुनरथध्वजस्थो जातः । अतो भारतीयसंस्कृतौ कपिष्ठलनामकस्यास्य विशिष्टस्य स्थलस्य अभूतपूर्वं स्थानं वर्तते। इत्येव सर्वं मनसि निधाय हरियाणासर्वकारेण संस्कृतस्य संस्कृतेश्च रक्षणाय प्रथमतया प्रदेशेऽस्मिन् महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापना 2018 तमे ईस्वीये वर्षे विहिता । अयञ्च संस्कृतविश्वविद्यालयः अत्यन्तमेवाल्पीयसा कालेन आभारते सुप्रथितो भूत्वा समेषां ज्ञानपिपासूनामाकर्षणकेन्द्रभूतो जातो वर्ततेऽति निश्चप्रचम् । निरन्तरमेव संस्कृतस्य प्रचारे-प्रसारे संलग्नोऽयं विश्वविद्यालयो द्रुतगत्या स्वलक्ष्यं प्रत्यग्रेसरन् विद्यते इति दृष्ट्वा मनसि महान्प्रमोदो जायते । अस्मिन केवलं वेदोपनिषद्-रामायण-महाभारत-दर्शन-पुराण-धर्मशास्त्रादिप्राचीनानां शास्त्राणामध्यापनेन प्राचीनभारतीयज्ञानन्यासभण्डागारस्य रक्षणमेव क्रियते अपितु-योग-आयुर्वेद-संगणक-जीवनप्रबन्धन-पत्रकारितादि-आधुनिकविषयाणामध्यापनेन, नितनवनवानुसन्धानेन, व्यवसायोन्मुखपाठ्यक्रममाध्यमेन च भारतीयसमस्तयुवकानां कृते आत्मनिर्भरतां प्रति प्रेरणमपि विधीयते ।

इत्थमेव विश्वविद्यालयोऽयं सततं भारतीयसंस्कृतेस्संस्कृतस्य च प्रचारं, प्रसारं, संरक्षणं, संवर्धनञ्च कुर्वन् भारतीयज्ञानविज्ञानपरम्परायाः शोधस्थलरूपेण प्रशिक्षणसंस्थानरूपेण न केवलं हरियाणाप्रदेशस्यापितु सम्पूर्णभारतस्य सांस्कृतिकमार्गदर्शनं कुर्वाणस्सदैव संवर्धतां देदिव्यतामिति कामयेऽहम् ।

प्रो० रमेशचन्द्रभारद्वाजः

कुलपतिः

विश्वविद्यालय अधिकारी (Officers of the University)

1. कुलाधिपति	महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय राज्यपाल हरियाणा
2. कुलपति	प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
3. कुलसचिव	डॉ. संजीव शर्मा
4. कुलानुशासक	डॉ. जगत नारायण कौशिक
5. छात्रावास मुख्य संरक्षक	डॉ. सुरेन्द्र पाल
6. अधिष्ठाता छात्र कल्याण	डॉ. जगत नारायण कौशिक
7. शैक्षणिक अधिष्ठाता	प्रो. भाग सिंह बोदला
8. अधिष्ठाता महाविद्यालय	डॉ. संजीव शर्मा (कुलसचिव)
9. पुस्तकालय प्रभारी	डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
10. परीक्षा नियन्त्रक	डॉ. सुरेन्द्र पाल
11. वित्त अधिकारी	श्री सुशील काजला

सङ्काय अधिष्ठाता/ विभागाध्यक्ष/अन्य अधिकारी

संकाय	अधिष्ठाता
1. प्रो. भाग सिंह बोदला	शैक्षणिक
2. डॉ. जगत नारायण कौशिक (सहाचार्य)	संस्कृत एवं साहित्य कला संस्कृति
3. डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स (सहाचार्य)	वेद-वेदाङ्ग
4. डॉ. जगत नारायण कौशिक (सहाचार्य)	दर्शन
5. डॉ. जगत नारायण कौशिक (सहाचार्य)	सामाजिक विज्ञान

विभाग	विभागाध्यक्ष
1. साहित्य	डॉ. जगत नारायण कौशिक
2. व्याकरण	डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स
3. योग	डॉ. रामानन्द मिश्र
4. दर्शन	डॉ. शशिकान्त तिवारी
5. ज्यौतिष एवं आयुर्वेद	डॉ.नरेश शर्मा
6. वेद	डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
7. हिन्दू अध्ययन	डॉ. कृष्णचन्द्र पाण्डे
8. धर्मशास्त्र	डॉ. शर्मिला

गैर-शैक्षणिक अधिकारी

1. उपकुलसचिव	डॉ. रवि भूषण गर्ग
2. अधीक्षक (परीक्षा एवं शैक्षणिक)	श्री सुभाष चन्द

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	**विश्वविद्यालय दृष्टि एवं ध्येय(University Vision and Mission)** क) दृष्टि (Vision) ख) ध्येय (Mission) ग) उद्देश्य (Objective of the University)	1
2.	**विश्वविद्यालय के बारे में (About the University)**	2
3.	**विश्वविद्यालय के शोध विभाग एवं शोद केन्द्र** **(University Research Department and Research Center)** ● वाल्मीकि शोध पीठ ● कपिष्ठल कठ संहिता शोध केन्द्र ● भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र ● सरस्वती सभ्यता शोध केन्द्र	2-3
4.	**विश्वविद्यालय के अन्य महत्वपूर्ण विभाग एवं परिषद्** **(Other Important Departments and Cells of the University)** ● राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.) एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर (N.C.C.) ● आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन परिषद् (IQAC- Internal Quality Assurance Cell) ● निगरानी परिषद् (Vigilance Cell) ● युवा कल्याण एवं सासंकृतिक गतिविधिय विभाग (Department of Youth Welfare and Cultural Activities) ● क्रीडा निदेशालय (Directorate of Sports) ● अन्तर्जालीय प्रकल्प (Web Portal) ● स्वास्थ्य केन्द्र (Health Centre) ● पुस्तकालय (Library) ● कम्प्यूटर व अन्य प्रयोगशालाएँ (Computer and other Laboratories) ○ नवकुण्डीय यज्ञशाला ○ योगशाला ● छात्रावास (Hostel) ● संस्कृत सम्भाषण एवं लेखन (Sanskrit Speaking and Writing)	3-5
5	**छात्रवृत्ति (Scholarship)**	5-6
6	**संकाय एवं विभाग (Faculty and Department)**	7
7	**पाठ्यक्रम एवं शुल्क विवरण (Course & Fee Detail)**	8-9
8	**सीटों की सख्या एवं प्रवेश प्रक्रिया (Number of Seats & Admission Process)**	9-11
9	**प्रवेश की अर्हता (Eligibility for Admission)**	11-15
10	**शैक्षणिक कैलेण्डर (Academic Calendar)**	16
11	**पञ्जीकरण प्रचार**	17

1. विश्वविद्यालय दृष्टि एवं ध्येय
(University Vision and Mission)

क) दृष्टि (Vision)

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा की गरिमा की संस्थापना के लिए महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मौनधारा (मून्दडी),कपिष्ठलम् (कैथल) का विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय के रूप में विकास ।

ख) ध्येय (Mission)

- ❖ संस्कृत विद्या की समग्र शाखाओं का सर्वाङ्गीण विकास तथा आधुनिक प्रणालियों के द्वारा संस्कृत साधनों की उपलब्धि।
- ❖ संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में परस्पर सांस्कृतिक अन्त: सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण व अनुसन्धान की व्यवस्था करते हुए भाषिक विविधता तथा सांस्कृतिक बहुलता का उन्नयन करना ।
- ❖ संस्कृत के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की ज्ञान प्रणालियों में दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तत्त्वों का संरक्षण एवं समुन्नयन तथा इन भारतीय ज्ञान-परम्पराओं का सांस्कृतिक धरोहर के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना ।

ग) उद्देश्य (Objectives of the University)

संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य संस्कृत विद्या का आधुनिक दृष्टिकोण के सापेक्ष पारम्परिक संस्कृत विद्या का प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं प्रोत्साहन के साथ-साथ उनका पालन करते हुए :-

i) संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में अनुसन्धान, प्रोत्साहन तथा संयोजन करना है, साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण तथा पाण्डुलिपि विज्ञान आदि को भी संरक्षण देना, जिससे पाठमूलक प्रासंगिक विषयों में आधुनिक शोध के निष्कर्ष के साथ सम्बन्ध स्पष्ट किया जा सके तथा इनका प्रकाशन हो सके।

ii) विशेषतः हरियाणा के समान उद्देश्यों वाली अन्य संस्थाओं को विश्वविद्यालय से सम्बद्ध करना।

iii) संस्कृत संवर्धन के लिए हरियाणा राज्य सरकार की नीतियों एवं योजनाओं को लागू करना।

iv) शोध एवं ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए समुचित व्यवस्थाओं को उपलब्ध करना।

v) प्राचीन-अर्वाचीन अध्ययन एवं विस्तारित योजनाएँ जो समाज के विकास में योगदान देती हों, उनका उत्तरदायित्व लेना।

vi) पालि, प्राकृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन करना।

vii) प्राच्य विद्याओं की दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं पुस्तकों का प्रकाशन करना।

viii) भारतीय ज्ञान-परम्परा में शोध एवं प्रशिक्षण का कार्य करना।

उपरोक्त के अतिरिक्त उन सभी उत्तरदायित्वों एवं कार्यों का निष्पादन करना जो इस संस्कृत विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को बढ़ाने के लिए आवश्यक हो।

2. विश्वविद्यालय के बारे में
(About the University)

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मूंदड़ी (मौनधारा), कैथल (कपिस्थल), हरियाणा सरकार द्वारा वर्ष 2018 में स्थापित एक राज्य विश्वविद्यालय है। यह कैथल से 8 किमी पूर्व, राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से 130 किमी, राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से 164 किमी, पहोवा से 30 किमी और कुरुक्षेत्र से 45 किमी दूर स्थित है। विश्वविद्यालय वर्तमान में अपने दो अस्थायी परिसरों से संचालित हो रहा है: (1) डॉ. बी.आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, कैथल और (2) कैथल ढांड मार्ग पर कैथल से टीक-10 किमी दूर। ग्राम मूंदड़ी (कैथल) में विश्वविद्यालय के परिसर का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस विश्वविद्यालय का नाम हिंदू ऋषि "महर्षि वाल्मीकि" के नाम पर रखा गया है, जो "रामायण" के रचनाकार थे और जिन्हें "संस्कृत" भाषा के "आदि-कवि" के रूप में भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि महर्षि वाल्मीकि आश्रम मूंदड़ी गांव में स्थित था। विश्वविद्यालय का उद्देश्य आधुनिक विश्व में "संस्कृत" शिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से "संस्कृत" और इसके समृद्ध ज्ञान को पुनर्जीवित करना है। इसके अलावा, वेदों, भारतीय भाषाओं, भारतीय संस्कृति, इतिहास और भारतीय दर्शन की महिमा को मंच पर वापस लाना है।

वर्तमान में, विश्वविद्यालय कुलपति प्रो रमेश चंद्र भारद्वाज के गतिशील नेतृत्व में काम कर रहा है। यह विश्वविद्यालय हरियाणा के सभी 70 गुरुकुल और संस्कृत महाविद्यालयों को साथ लेकर न केवल संस्कृत भाषा बल्कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और प्रचार के लिए अहम भूमिका अदा कर रहा है। विश्वविद्यालय भारतीय शिक्षा प्रणाली की गुरुकुल परंपरा को सहयोग, समर्थन और पोषण प्रदान करता है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) को आधुनिक और साथ ही पारंपरिक, मूल्य वर्धित और कौशल-आधारित पाठ्यक्रम दोनों पर जोर देने के साथ सौंदर्यपूर्ण तरीके से लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। संस्कृत व्याकरण और साहित्य में स्नातक और स्नातकोत्तर के अलावा, विश्वविद्यालय ने वेद, ज्योतिष, दर्शन, हिंदू अध्ययन, धर्म शास्त्र और योग में ये डिग्री पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। आयुर्वेद, कर्मकांड और ज्योतिष में डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। विश्वविद्यालय का उद्देश्य शिक्षार्थियों को जिम्मेदार नागरिकों में बदलने और भारत को वैदिक काल की तरह रहने के लिए सबसे अच्छी जगह बनाने के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना भी है।

3. विश्वविद्यालय शोध विभाग एवं शोध केन्द्र
(University Research Department and Research Center)

महर्षि वाल्मीकि संस्कत विश्वविद्यालय में शोध एवं प्रकाशन विभाग स्थापित है। जिसके अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन, शोध पत्रिका, महर्षि प्रभा मासिक ई-पत्रिका प्रकाशित की जाती है। जिसमें विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ एवं प्रगति विवरण के साथ साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवम् अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं द्वारा ज्ञान विज्ञान परक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें विशेष रूप से प्रतियोगिता परीक्षाओं को दृष्टिगत करते हुए छात्र एवं समाज के लिए प्रकाशन किया जाता है। जो निःशुल्क विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.mvsu.ac.in पर दिए गए लिंक (https://mvsu.ac.in/NewsTender/37) से डाउनलोड की जा सकती है।

विश्वविद्यालय में शोध कार्यों के लिए चार शोध केन्द्र एवं पीठ कार्यरत हैं।

I. **महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ-** महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ की स्थापना सत्र 2022-23 में दिनांक 08 अक्तूबर 2022 को माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज की अध्यक्षता एवं मुख्यातिथि श्री कृष्ण कुमार बेदी, राजनैतिक सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार के द्वारा किया गया। जिसका उद्देश्य महर्षि वाल्मीकि के हस्त लिखित रामायण के ज्ञान की प्रेरणाओं को जन-जन तक पहुंचाना है।

II. **कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र-** विश्वविद्यालय में सत्र 2022-23 में कपिष्ठल कठ संहिता शोध केन्द्र की स्थापना की गई है। 17 मार्च 2023 को कपिष्ठल-कठ संहिता का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, अध्यक्षता में मुख्यातिथि श्री भारत भूषण भारती, राजनैतिक सलाहकार, माननीय मुख्यमन्त्री, हरियाणा सरकार द्वारा किया गया। ध्यातव्य है कपिष्ठल कठ संहिता का उद्भव एवं उद्गम कपिष्ठल वर्तमान नाम कैथल में हुआ।

III. **भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र-** भारत एवं हरियाणा सरकार का मुख्य लक्ष्य है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा सम्पूर्ण विश्व तक प्रसारित एवं अग्रसरित होकर भारत को नई पहचान दें जिससे भारत अपनी ज्ञान-परम्परा के द्वारा पुनः विश्वगुरु के पथ पर अधिष्ठित हो। भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना शैक्षणिक सत्र 2022-23 में तथा उद्घाटन समारोह 21 मार्च 2023 प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, माननीय कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल की अध्यक्षता में मुख्यातिथि प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा, निदेशक, अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान, गुरुग्राम के कर कमलों द्वारा किया गया। इस केन्द्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान-परम्परा से प्रत्येक भारतीय में गौरवता का अनुभव करवाकर उनके द्वारा भारत को प्रगतिपथ की ओर दृढ़ता से अग्रसर करने में सहयोग करवाना तथा इस बात पर गर्वानुभूति करवाना है। 20/21 मार्च में सूक्ष्मदिक्साधनं पञ्चाङ्ग मण्डनं राष्ट्रीय विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई तथा 14-16 अप्रैल को पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री निर्माण त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें सम्पूर्ण भारत से आए हुए शैक्षणिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के आचार्यों के द्वारा पाठ्यक्रम निर्माण करवाये गए। 05-07 मई 2023 को राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्, नवदेहली के आंशिक सहयोग के द्वारा शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में यह राष्ट्रीय सम्मेलन भारतीय ज्ञान-परम्परा केन्द्र द्वारा आयोजित किया गया।

IV. **सरस्वती सभ्यता शोध केन्द्र-** सरस्वती सभ्यता शोध केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2022-23 में तथा उद्घाटन समारोह 10 अक्तूबर 2022 को प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, माननीय कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल की अध्यक्षता एवं मुख्यातिथि महामहिम राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, हरियाणा सरकार के कर कमलों द्वारा किया गया। इस केन्द्र का उद्देश्य है कि हरियाणा में सरस्वती नदी के तट पर विकसित वैदिक सभ्यता का परिचय जन सामान्य को कराना एवं सरस्वती सभ्यता वैदिक सभ्यता के साहित्यिक एवं पुरातात्विक सन्दर्भ के साथ अनुसंधान करना।

4. विश्वविद्यालय के अन्य महत्वपूर्ण विभाग एवं परिषद्

(Other Important Departments and Councils of the University)

I. **राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) -** विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना पूर्णतः क्रियाशील है। इसके स्वयं सेवक अपने पदाधिकारियों के नेतृत्व में स्वच्छता, शराबबंदी, दहेज उन्मूलन, महिला

सशक्तीकरण, पर्यावरण, नागरिक शिक्षा, सामाजिक सद्भाव, मानवाधिकार की सुरक्षा, बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओ, कैशलेश व्यवस्था, ट्रैफिक नियंत्रण, खुले शौच से मुक्ति, एड्स नियंत्रण एवं रक्तदान आदि के लिए जनजागरण अभियान चलाने के लिए तत्पर हैं। अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्चतर शिक्षा निदेशालय, हरियाण सरकार, चण्डीगढ के पत्र क्रमांक **MEMO NO:- 15/1-2020 NSS (2), दिनांक 10.05.2023** के अनुसार, यदि किसी प्रवेशार्थी के पास NSS प्रमाणपत्र है तो उसे प्रवेश में 5% की छूट दी जा सकती है। NCC महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित है। इससे सम्बंधित कार्य अभी प्रगति पर है।

II. **आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन परिषद् (IQAC- Internal Quality Assurance Cell) -** NAAC के निर्देशानुसार इस विश्वविद्यालय में एक IQAC (**Internal Quality Assurance Cell)** है। इस **Cell** की नियमित बैठकें आयोजित की जाती हैं तथा किए गए कार्यों की समीक्षा की जाती है। जिसमें विश्वविद्यालय के बहुविध/आन्तरिक कार्यों, सम्मेलनों व कार्यशालाओं के द्वारा विश्वविद्यालय की प्रगति सुनिश्चित की जाती है।

III. **निगरानी परिषद् (Vigilance Cell) -** वर्तमान में विश्वविद्यालय के अन्तर्गत निगरानी परिषद् है। तत्काल प्रशासनिक स्तर पर ही विश्वविद्यालय के कार्यकलापों पर निगरानी रखी जाती है। स्वतन्त्र रूप से विश्वविद्यालय स्तर पर निगरानी कोष्ठ (Vigilance Cell) का गठन किया जा चुका है।

IV. **युवा कल्याण एवं सांस्कृतिक गतिविधि विभाग (Department of Youth Welfare and Cultural Activities)-** युवा कल्याण विभाग छात्र-छात्रों के कल्याण के लिए समय समय पर शैक्षणिक भ्रमण, रक्त दान शिविर, कार्यशालाएँ, सम्मेलन एवं ज्ञानात्मक गतिविधियाँ जिससे छात्र-छात्राओं का सर्वाङ्गीण विकास सम्भव हो सके करवाता है। इसका उद्देश्य सर्वदा युवा (छात्र-छात्राओं) के कल्याण हेतु कार्यों का सम्पादन होता है। विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय समय पर अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों के आयोजन करवाए जाते हैं तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं को युवा महोत्सव में शामिल किया जाता है। छात्र-छात्राओं को पुरस्कार दिए जाते हैं।

V. **क्रीड़ा निदेशालय (Directorate of Sports)-** विश्वविद्यालय के अन्तर्गत क्रीड़ा विभाग स्थापित है जिसके अध्यक्ष, छात्र कल्याण के अधीन संचालित है। विश्वविद्यालय में गत वर्ष में इस विभाग के द्वारा कबड्डी, वॉलीवॉल, एथलेटिक्स, योग आदि क्रीडाविधाओं का आयोजन किया गया था। राजभवन के निर्देशानुसार आयोजित एकलव्य एवं तरंग प्रतियोगिताओं में इस विश्वविद्यालय के छात्र भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त करते रहे हैं। विश्वविद्यालय में इस विभाग के द्वारा समय-समय पर युवा-महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है।

VI. **अन्तर्जालीय प्रकल्प (Web Portal)-** महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय सर्वदा से ही **सर्वे भवन्तु सुखिनः** इस सूत्र को ध्यान में रखते हुए समस्त राष्ट्र कल्याण के लिए कटिबद्ध है। इसलिए अन्तर्जालीय माध्यम से कुछ अंशकालीन पाठ्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं सम्मेलन भी आयोजित किए जाते हैं

VII. **स्वास्थ्य केन्द्र (Health Center)-** विश्वविद्यालय में समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर लगाये जाते रहे हैं। कोरोना काल में भी शिविर लगाकर निःशुल्क कोरोना परीक्षण किए गए हैं। स्वास्थ्य के संदर्भ में विश्वविद्यालय में कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन होता रहा है। जिसमें विशेषकर आयुर्वेद विभागीय छात्र-छात्राएँ शामिल हुए। विश्वविद्यालय में पञ्चकर्म केन्द्र का भी संचालन वर्तमान सत्र 2022-23 से चल रहा है।

VIII. **पुस्तकालय (Library)-** विश्वविद्यालय में सुसमृद्ध तथा विशाल ग्रन्थालय की सुविधा विद्यमान है। इनमें प्राच्य विद्या तथा संस्कृत शास्त्रों के दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध हैं। नियमित रूप से शोध-पत्र तथा पत्रिकाएँ भी आती रहती हैं। विश्वविद्यालय के जगदीशपुरा अम्बेडकर परिसर एवं नूतन टीक परिसर दोनों में ही पुस्तकालयों की व्यवस्था है। विश्वविद्यालय के परिसर में अन्तर्जाल (Internet) की सुविधा सभी शोध-छात्रों के लिए उपलब्ध है। विश्वविद्यालय के सभी विभागों को निर्धारित पुस्तकालय नियमों का पालन करना होगा जिन्हें सभी विभाग अपने-अपने पुस्तकालय में प्रदर्शित करेंगे, यदि उनके विभाग में पृथक् विभागीय पुस्तकालय होगा।

IX. **कम्प्यूटर व अन्य प्रयोगशाला (Computer and Other Laboratory)-** विश्वविद्यालय में प्रयोगशाला की सुविधा है। प्रमुख रूप से कम्प्यूटर प्रयोगशाला, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, शैक्षणिक तकनीकी प्रयोगशाला तथा भाषा शिक्षण प्रयोगशाला इत्यादि प्रयोगशालाएँ उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय के सभी विभागों को निर्धारित प्रयोगशाला नियमों का पालन करना होगा जिन्हें सभी विभाग अपने-अपने प्रयोगशाला में प्रदर्शित करेंगे, यदि पृथक् प्रयोगशाला है तो।

- **नवकुण्डीय यज्ञशाला-** विश्वविद्यालय के नूतन टीक परिसर में सत्र 2022-23 से ही एक नवकुण्डीय यज्ञशाला का उद्घाटन दिनाङ्क 18 मार्च 2023 को रूद्रयाज्ञ से सम्पन्न हुआ। इस यज्ञशाला में नवकुण्डों का निर्माण प्रगति पर चल रहा है। क्योंकि अभीष्ट फल प्राप्ति के लिए अलग-अलग यज्ञ कुण्ड का निर्माण आवश्यक रहता है।
- **योगशाला-** विश्वविद्यालय के नूतन टीक परिसर में सत्र 2022-23 से ही एक योगशाला का निर्माण किया गया है जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी नियमित योगाभ्यास करते हैं। विश्वविद्यालय के योग विभागीय आचार्यों के अथक परिश्रम से विश्वविद्यालयीय छात्र-छात्राएँ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई योग प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण करते हैं तथा पुरस्कृत होकर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाते हैं। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं योगशाला में विभागीय आचार्यों द्वारा योग की प्रायोगिक कक्षाओं का भी संचालन होता है।

X. **छात्रावास (Hostel)-** विश्वविद्यालय द्वारा पुरुष एवं महिला छात्र व छात्राओं के लिए पृथक-पृथक छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है।

XI. **संस्कृत सम्भाषण एवं लेखन (Sanskrit Speaking and Writing)- सम्भाषण कक्षा**- प्रत्येक सत्र प्रारम्भ होने से पहले विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत संभाषण कक्षाओं का आयोजन सत्र 2019-20 से ही किया जा रहा है। जिससे विषय प्रवेश में विद्यार्थियों को सरलता हो सके एवं संस्कृत संभाषण में कुशल होकर व्यवहार में संस्कृत का प्रयोग करने में दक्ष हो सकें।

5. छात्रवृत्ति (Scholarship)

I. विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति देने का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करना है। हरियाणा सरकार, भारत वर्ष की विभिन्न संस्थाओं के द्वारा एवं सामाजिक सहयोग के द्वारा निर्धारित छात्रवृत्तियों को निर्दिष्ट वरीयता क्रम के अनुसार छात्र-छात्राओं को प्रदान की जाएगी।

छात्रवृत्ति की राशि को विश्वविद्यालय द्वारा किसी भी समय कम या अधिक किया जा सकता है। शास्त्री एवं आचार्य के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयीय छात्रवृत्ति नियमों के अनुसार छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

II. **विश्वविद्यालय शोध छात्रवृति योजना (University Research Scholarship Scheme)-** विद्यावारिधि (PH.D.) के शोधार्थियों के लिए भी 'विश्वविद्यालय शोध छात्रवृत्ति' का प्रावधान है।

III. **सीखते समय कमाएं योजना (Earn While Learn Plan)-** इस योजना के लाभ के लिए शास्त्री एवं आचार्य के निम्न नियम हैं-

1. प्रत्येक विभाग से दो पात्र एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों के नाम योजना के लिए आमंत्रित होंगे।
2. छात्रों की योग्यता मानदण्ड निम्नानुसार होंगे-
   (क) एक विद्यार्थी सामान्य/आर्थिक आधार पर कमजोर होना चाहिए।
   (ख) एक विद्यार्थी अनुसूचित जाति/पिछड़ा वर्ग श्रेणी से होना चाहिए।
   (ग) एक विद्यार्थी छात्र और दूसरी छात्रा हो सकती है।
   (घ) चयन मानदंड शैक्षणिक वरीयता और आर्थिक मदद की जरूरत अनुसार होंगे।
   (ङ) विद्यार्थियों को आय प्रमाण पत्र देना होगा।
   (च) विद्यार्थियों को योजना के तहत कार्य पर 100/- रुपये प्रति घंटा मानदेय दिया जाएगा। जिसमें वह प्रतिदिन दो घण्टे कार्य कर सकता है।
   (छ) एक विद्यार्थी को एक महीने में अधिकतम 2400/- रुपये मानदेय का भुगतान किया जायेगा।

Earn While Learn योजना का लाभ विद्यावारिधि (Ph.D.) के छात्रों को भी मिलता है। विद्यावारिधि की धनराशि नियम भिन्न है, जो निम्न हैं-

(क) इस योजना के तहत 200/- रुपये प्रति घंटा मानदेय दिया जायेगा। जिसमें वह प्रतिदिन दो घंटे तीस मिनट कार्य कर सकता है। एक दिन का मानदेय अधिकतम 500/- रुपये व एक महीने का अधिकतम 6000/- रुपये मानदेय का भुगतान किया जाएगा।

(ख) इस योजना में लाभार्थियों का चयन शैक्षणिक वरीयता और आर्थिक आधार पर व मानदण्डों के अनुसार किया जाएगा।

रेलवे रियायती यात्रा की सुविधा- विश्वविद्यालय परिसर में पंजीकृत समस्त छात्रों को शीतावकाश एवं ग्रीष्मावकाश के अवसर पर अपने गृहनगर जाने तथा विश्वविद्यालय परिसर वापस आने के लिए रेलवे द्वारा किराये में छूट दी जाती है। ग्रीष्मावकाश में अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित छात्रों को केवल घर जाने की सुविधा दी जायेगी। इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए छात्र द्वारा आवेदन करने पर कार्यालय द्वारा आवश्यक प्रपत्र निर्गत किये जाते हैं। यात्रा आरम्भ से एक सप्ताह पहले आवेदन पत्र कार्यालय में प्रस्तुत करना होगा। अवधेय है कि रेलवे के नियमानुसार यह छूट केवल 25 वर्ष से कम आयु वाले छात्रों को ही उपलब्ध है किन्तु शोध-छात्र के लिए अवकाश अथवा गृहनगर का बन्धन नहीं है। वे अपने शोध-निर्देशक की संस्तुति पर शोध कार्य करने के लिए किसी भी समय भारत के किसी भी नगर की रेलवे छूट पर यात्रा कर सकते हैं।

6. संकाय एवं विभाग (Faculties and Departments)

क्रं.सं.	संकाय	विभाग	शास्त्री	आचार्य	डिप्लोमा
1.	वेद-वेदाङ्गसंकाय	वेद	वेद	वेद	वेद (एकवर्षीय)
		ज्योतिष	ज्योतिष	ज्योतिष	ज्योतिष (एकवर्षीय)
		व्याकरण	व्याकरण	व्याकरण	कर्मकाण्ड (एकवर्षीय)
		धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	धर्मशास्त्र	वैदिक गणित (एकवर्षीय)
		-	-	-	आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
					वास्तु (एकवर्षीय)
2.	साहित्य-संस्कृति संकाय	साहित्य	साहित्य	साहित्य	संस्कृत भाषा दक्षता (एकवर्षीय)
					-
		हिन्दू अध्ययन	-	हिन्दू अध्ययन (एम. ए.)	-
					-
3.	दर्शन संकाय	दर्शन	दर्शन	दर्शन	-
		योग	योग	योग (एम. ए.)	योग (एकवर्षीय)
4.	सामाजिक विज्ञान संकाय	-	हिन्दी	-	-
		-	अंग्रेजी	-	-
		-	इतिहास	-	-
		-	राजनीति	-	-

नोट-: विश्वविद्यालय किसी भी पाठ्यक्रम में कम से कम 05 छात्र होने पर ही सम्बन्धित पाठ्यक्रम संचालित किया जा सकता है । पाठ्यक्रम संचालित न होने पर नामांकित छात्र का शुल्क वापिस किया जाएगा अथवा विषय परिवर्तन में छात्र का नामाङ्कन शुल्क अन्य विषय के लिए समायोजित किया जा सकता है ।

7. पाठ्यक्रम एवं शुल्क विवरण (Course & Fee Details)

पाठ्यक्रम	योग्यता	अवधि
शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honours)	10+2/समकक्ष	चार वर्षीय
आचार्य (M.A.)- साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र	शास्त्री/B.A./ समकक्ष	द्विवर्षीय
एम. ए.- हिन्दू अध्ययन	स्नातक (किसी भी विषय में)	द्विवर्षीय
एम. ए.- योग	शास्त्री/B.A./ समकक्ष	द्विवर्षीय
विद्यावारिधि (पी. एच. डी.)	परास्नातक	न्यूनतम तीन वर्ष
डिप्लोमा	10+2/समकक्ष	एक वर्षीय
डिप्लोमा (आयुर्वेद)	10+2/समकक्ष	द्वि-वर्षीय

7.1 पाठ्यक्रमानुसार शुल्क विवरण

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश स्वीकृत होने पर प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित शुल्क एवं सुरक्षित धनराशि (रुपये में) पूरे सत्र के लिए आरम्भ में ही जमा करानी होगी।

परिचायिका शुल्क = रु. 200/- (परिचायिका का मुद्रण प्रति यदि चाहते हो तो)

शैक्षिक पाठ्यक्रमों का शुल्क

क्र. सं.	विवरण	शास्त्री	आचार्य	डिप्लोमा (एक वर्षीय)	डिप्लोमा (द्वि-वर्षीय)
1.	पंजीकरण शुल्क	150	150	150	200
2.	प्रवेश-शुल्क	250	250	250	200
3.	सुरक्षित धन (Refundable)*	200	300	200	200
4.	नामांकन शुल्क	50	50	50	50
5.	परिचय-पत्र	50	50	50	50
6.	पत्रिका-शुल्क**	70	100	70	70
7.	क्रीड़ा-शुल्क	100	100	100	100
8.	छात्रकोष-शुल्क	300	300	300	300
9.	विविध प्रवृत्ति शुल्क	200	200	200	200
10.	कला/कृति शुल्क	50	50	50	50
11.	परीक्षा-शुल्क	400	400	400	400
12.	विकास शुल्क	500	500	500	500
13.	रेड क्रॉस	80	80	80	80
14.	राष्ट्रीय सेवा योजना	50	50	50	50
15.	पत्राचार शुल्क	50	50	50	50
16.	पाठ्यक्रम शुल्क	50	50	50	50
17.	शिक्षा शुल्क	100	100	1600	4600
18.	संगणक शुल्क	50	50	50	50
19.	प्रायोगिक शुल्क	-	-	2000	3000
	योग	**रु. 2700/-**	**रु. 2830/-**	**रु. 6200/-**	**रु. 10,200/-**

* सुरक्षित धन (पुस्तकालय हेतु) डिप्लोमा प्रथम सत्रार्द्ध/शास्त्री प्रथम सत्रार्द्ध एवं आचार्य प्रथम सत्रार्द्ध में ही लिया जाएगा। अन्य सत्रार्द्धों में प्रवेश शुल्क में इतना कम रहेगा। (धरोहर राशि केवल नवीन पंजीकरण छात्रों के लिए देय है।)

** छात्रों के आलेख, कविता, निबन्ध आदि विश्वविद्यालय परिसर से प्रकाशित किए जाएंगे।

8. सीटों की संख्या, प्रवेश प्रक्रिया एवं प्रवेश समय सारणी
(Number of Seats, Admission Process and Admission Time Table)

पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विभाग में अधिकतम सीटों की संख्या प्रत्येक विषयों के लिए - आचार्य-30, शास्त्री-35, डिप्लोमा-50 निर्धारित हैं।

शास्त्री/B.A., आचार्य/M.A. तथा डिप्लोमा सभी पाठ्यक्रम में प्रवेश मैरिट आधार पर किया जाएगा

प्रवेश सूचना

प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन व आवेदन	**दिनांक 01.06.2023 से 30.06.2023 तक**
दस्तावेज जाँच व प्रवेश प्रक्रिया	**दिनांक 03.07.2023 से 15.07.2023 तक**
शुल्क जमा	**दिनांक 03.07.2023 से 15.07.2023 तक**

8.1 प्रवेश लेते समय आवश्यक प्रमाण-पत्र

i) जन्म तिथि प्रमाण पत्र। (Birth Certificate)

ii) पूर्व-उत्तीर्ण कक्षा का प्रमाण-पत्र जो यह सिद्ध करें कि आपने सम्बन्धित विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/विद्यालय से कक्षा उत्तीर्ण की है।

iii) चरित्र प्रमाण-पत्र। (Charter Certificate)

iv) आधार कार्ड/ परिवार पहचान-पत्र/ स्थायी निवास प्रमाण-पत्र।

v) मूल-स्थानान्तर प्रमाण-पत्र (Original certificate of T.C.)

vi) प्रव्रजन प्रमाण-पत्र (Migration Certificate) अन्य विश्वविद्यालयों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए (Only for students of other University)

vii) यदि सम्भव है तो क्रीड़ा सम्बन्धित प्रमाण-पत्र।

viii) अंक तालिका

ix) अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्चतर शिक्षा निदेशालय, चण्डीगढ के पत्र क्रमांक **MEMO NO:- 15/1-2020 NSS (2), दिनांक 10.05.2023** के अनुसार, यदि किसी प्रवेशार्थी के पास NSS प्रमाणपत्र है तो उसे प्रवेश में 5% की छूट दी जा सकती है।

8.2 विशेष हिदायतें

1. विश्वविद्यालय के प्रत्येक पाठ्यक्रम में निर्धारित-अर्हता में कोई छूट नहीं दी जाएगी ।
2. जिस अभीष्ट विषय में विद्यार्थी प्रवेश लेना चाहता है यदि उस विषय में निर्धारित अधिकतम संख्या हो चुकी है तो उस विषय में प्रवेश नहीं दिया जा सकता । यदि विद्यार्थी चाहे तो अन्य विषय में अपनी रुचि अनुसार प्रवेश ले सकता है ।
3. एक शैक्षणिक-वर्ष में किसी नियमित पाठ्यक्रम के साथ एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भी अपनी पात्रता के अनुसार प्रवेश ले सकता है ।
4. अर्हता-परीक्षा-परिणाम न आने पर या अनुत्तीर्ण होने की स्थिति में सम्बन्धित छात्र/छात्रा का प्रवेश स्वतः निरस्त समझा जाएगा।
5. पूर्व-उत्तीर्ण-परीक्षाओं की उत्तीर्णता का प्रमाणपत्र विश्वविद्यालय में जमा करवाना आवश्यक होगा ।
6. जन्मतिथि-प्रमाणपत्र जैसे दसवीं या तत्सम्बन्धी परीक्षा का प्रमाणपत्र, जिसमें जन्मतिथि का उल्लेख हो आवश्यक होगा ।
7. चरित्र-प्रमाणपत्र (पूर्व-संस्था के प्रधानाचार्य द्वारा) (अंशकालिक-पाठ्यक्रम के प्रवेशार्थी राजपत्रित अधिकारी/संस्था-प्रमुख जहाँ अभ्यर्थी ने अध्ययन किया हो, के द्वारा) ।
8. मूल-निवास-प्रमाणपत्र । (केवल ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने हरियाणा के किसी विद्यालय/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय से न्यूनतम योग्यता शिक्षा प्राप्त की हो उन्हें मूल निवास प्रमाण पत्र देना होगा)
9. विश्वविद्यालय के नियमानुसार मूल-स्थानान्तरण-प्रमाणपत्र (Original T.C.)/प्रव्रजन-प्रमाणपत्र (माइग्रेशन सर्टिफिकेट)/ अंक-तालिकाएं (मार्कशीट) निर्धारित समयावधि में अनिवार्य रूप से नामांकन शाखा(प्रवेश –प्रकोष्ठ) - में जमा करवानी होंगी, अन्यथा स्वतः ही प्रवेश निरस्त किया जाएगा ।
10. क्रीडा सम्बन्धी-प्रमाणपत्र (राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने का प्रमाणपत्र यदि कोई हो तो)
11. प्रमाणपत्र (यदि प्रवेशार्थी आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग (EWS), अनुसूचित-जाति, जनजाति एवं नॉन-क्रिमीलेयर-सम्बन्धी पिछड़ी जाति, अल्पसंख्यक-वर्ग या विकलांग कोटे का हो) तो नगर मजिस्ट्रेट/ सब डिविजनल मजिस्ट्रेट/तहसीलदार या निर्धारित अधिकारी द्वारा प्रमाणित होना चाहिए। विकलांग अभ्यर्थियों के लिए मुख्य स्वास्थ्य-अधिकारी, राजकीय चिकित्सालय द्वारा प्रमाणित होना चाहिए। (न्यूनतम 40 प्रतिशत विकलांगता पर ही विचार किया जाएगा)
12. शास्त्री प्रथमवर्ष में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्रा 15 दिन की समयावधि में ही विषय-परिवर्तन कर सकता/सकती है। विषय परिवर्तन करने हेतु सम्बन्धित-विषयों के विभागाध्यक्ष एवं संकाय-प्रमुख के माध्यम से आवेदनपत्र संस्तुत करवाकर शैक्षणिक-विभाग में जमा करवाना होगा।

13. 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' के निर्देशानुसार विभिन्न-पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट सभी अभ्यर्थियों को अपने आधार-कार्ड एवं बैंक-खाते से सम्बन्धित-दस्तावेज की प्रतिलिपि प्रवेश-आवेदन पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक अभ्यर्थी को आवेदन पत्र के साथ अपना एक अतिरिक्त नवीन छायाचित्र (फोटोग्राफ) संलग्न करना अनिवार्य है । जिस पर दिनाङ्क अङ्कित हो ।
14. योग के छात्रों को योग-वेशभूषा एवं यौगिक-सामग्री का व्यय-निर्वहन स्वयं करना होगा ।
15. किसी भी छात्र के विरुद्ध अनुशासनहीनता, अमर्यादित-आचरण, रैगिंग-सम्बन्धी-अपराध, दुर्व्यवहार आदि की शिकायत प्राप्त होने पर अनुशासन-समिति की अनुशंसा के आधार पर कुलपति द्वारा छात्र का पंजीकरण नियमानुसार निरस्त किया जा सकता है और उसके विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही भी हो सकती है ।

9. प्रवेश की अर्हता
(Eligibility for Admission)

शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honours)

शास्त्री प्रतिष्ठा/ (B.A. Honours) **पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थ नियम :**

शास्त्री प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम में प्रवेश मैरिट आधार पर किया जाएगा । प्रवेश के लिए निम्नलिखित परीक्षाओं में से किसी एक में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है –

1. उत्तर मध्यमा/प्राक्शास्त्री/विशारद/10+2(बारहवीं)

अथवा

2. मान्यता प्राप्त किसी संस्कृत विश्वविद्यालय या संस्कृत परिषद् से परम्परागत प्रणाली से उच्चत्तर माध्यमिक या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की गई हों ।

अथवा

3. महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की वेदविभूषण परीक्षा उत्तीर्ण की गई हों ।

अथवा

4. शास्त्री प्रतिष्ठा/(B.A. Honours) पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ चुने गये भाषा/आधुनिक विषय, उत्तरमध्यमा/(बाहरवीं कक्षा) तक पढ़े हुए होने चाहिए ।

शास्त्री प्रतिष्ठा/(B.A. Honours) **का पाठ्यक्रम :**

शास्त्री प्रतिष्ठा/(B.A. Honours) परीक्षा चतुर्वर्षीय/8 सेमेस्टर में 176 श्रेयाङ्क (Credits) से सम्पन्न होगी ।

मुख्य विषय : (अधोलिखित में से कोई एक)

वेद/ व्याकरण/ज्योतिष/साहित्य/ दर्शन/ योग/ धर्मशास्त्र

1. शास्त्री प्रतिष्ठा (Shastri/ Honours)/(B.A. Honours) का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम प्रश्नपत्रों के साथ 176 क्रेडिट का होगा। मूल्याङ्कन के 80 अङ्क एवं आन्तरिक – मूल्याङ्कन 20 अङ्क का होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन चार भागों में विभक्त होगा, यथा-

भाग		**अङ्क**
1. आन्तरिक परीक्षण /प्रदत्त नियत कार्य (Internal test/Assignment)	-	05
2. शास्त्र सम्बद्ध संगोष्ठी/शास्त्र परिचर्चा (Shastriya Paricharcha (seminar/symposia)	-	05
3. शिक्षण स्रोत सामग्री का संचयन एवं प्रबन्धन (Learning Resource Maintenance)	-	05
4. उपस्थिति (Attendance)	-	05
कुल योग-	(1+2+3+4) = चारों खण्ड का (5 +5+5+5) = 20 अङ्क	20 अङ्क

विशेषः-

i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शास्त्री प्रतिष्ठा/(B.A. Honours) पाठ्यक्रम को उतीर्ण करने वाले अभ्यर्थी स्नात्तकोत्तर एक वर्ष में पूरा कर सकेंगे।

आचार्य (एम.ए.)

आचार्य कक्षा में प्रवेश के लिए निम्नलिखित परीक्षाओं में से एक परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

शास्त्री : संस्कृत विश्वविद्यालय/संस्कृत महाविद्यालय या मान्यता प्राप्त संस्था।

अथवा

शिरोमणि : मद्रास विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,तिरुपति।

अथवा

विद्वद् मध्यमा : कर्नाटक सरकार, बैंगलुरु

अथवा

शास्त्रभूषण : (प्रीलिमिनरी) केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम्।

अथवा

विद्या प्रवीण : आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर

अथवा

बी.ए. / बी.ए. ऑनर्स/संस्कृत : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/महाविद्यालय से।

विशेष:- (संस्कृत माध्यम से शास्त्री/B.A को वरीयता दी जाएगी)

प्रथमपत्रम् : अनिवार्य पत्र (सभी के लिए) जो अधोलिखित मूल विषयों में से एक चयनित करना होगा।

मूलविषय : अधोलिखित

वेद	व्याकरण	ज्योतिष	साहित्य
दर्शन	धर्मशास्त्र	योग (M.A.)	हिन्दू अध्ययन (M.A.)

विशेष नियम :

- जिन आवेदकों ने बी.ए. (संस्कृत)/आचार्य/एम.ए अथवा वेदालंकार/विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की है, वे आचार्य/एम. ए. स्तर पर साहित्य/धर्मशास्त्र/दर्शन/ज्योतिष/वेद/योग/हिन्दू-अध्ययन व व्याकरण विषय ले सकते हैं।
- आचार्य (M.A.) कक्षा षाण्मासिकी परीक्षा प्रणाली के अनुसार दो वर्षात्मक होगी जिसमें षाण्मासिक चार सत्रार्द्ध होंगे।
- सत्र 2021-22 से विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दू-अध्ययन शिक्षा विषय में द्विवर्षीय स्नातकोत्तर (M.A.) पाठ्यक्रम आरम्भ किया जा चुका है जिसमें हिन्दू धर्म के वैशिष्ट्य और परम्पराओं पर आधारित पाठ्यक्रम की रचना की गई है। मुख्य रूप से तत्त्व, प्रमाण विमर्श, वेद परम्परा और शास्त्रों के अर्थ निर्धारण की पद्धतियाँ, पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा, रामायण, महाभारत, स्थापत्य, लोकवार्ता, नाट्य, कला, भाषा विज्ञान और सैन्य विज्ञान भारतीय अर्थ विज्ञान एवं भारतीय विधि इत्यादि विषयों को शामिल किया गया है।
- आचार्य सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में कुल 20 पत्र होंगे जिनका कुल श्रेयांक 80 होगा, जिनका विवरण अधोलिखित हैः-
  i) मुख्य विषय के 14 पत्र होंगे, जिनमें प्रत्येक पत्र 4 श्रेयांक का होगा जो कुल 56 श्रेयाङ्क के होंगे।
  ii) प्रत्येक सत्रार्द्ध में रोजगार परक विषय के 4 पत्र होंगे, तथा प्रत्येक पत्र 4 श्रेयांक का होगा। कुल 16 श्रेयाङ्क के होंगे।
  iii) शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान का 1 पत्र होगा जिसका श्रेयांक 4 होगा। जो तृतीय सत्रार्द्ध में होगा। सभी मूल-विषयों के लिए अनिवार्य रुप से समान होगा।
  iv) लघु शोध प्रबन्ध, श्लाका एवं शास्त्रीय व्याख्यान का 1 पत्र होगा जिसका श्रेयांक 4 होगा जो चतुर्थ सत्रार्द्ध में होगा जो सभी विषयों के लिए अनिवार्य से समान होगा।

आन्तरिक परीक्षण/प्रदत्त नियत कार्य (Internal test/Assignment)	-	05
शास्त्र सम्बद्ध संगोष्ठी/शास्त्र परिचर्चा	-	05

(Shastriya Paricharcha (seminar/symposia)			
शिक्षण स्रोत सामग्री का संचयन एवं प्रबन्धन		-	05
(Learning Resource Maintenance)			
उपस्थिति (Attendance)		-	05
कुल योग	खण्ड 1+2+3+4 =	कुल चार खण्ड	
	5+5+5+5 =		**20 अङ्क**

टिप्पणी :

क) सम्बन्धित विषयाध्यापक को आन्तरिक मूल्याङ्कन की अंक तालिका एवं तत् सम्बन्धी सभी मूल्याङ्कित प्रपत्रों को विभागाध्यक्ष के माध्यम से परीक्षा विभाग में अनिवार्य रूप से जमा करना होगा। जिससे आवश्यकता अनुसार परीक्षा विभाग मूल्याङ्कित प्रपत्रों के पुनर्निरीक्षण को एवं छात्र/अभिभावक के मांगने पर उनकी सन्तुष्टि हेतु अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर सके। परीक्षा विभाग समग्र प्रपत्रों का यथोचित समय तक रख रखाव परीक्षा मानदण्डों के अनुरूप करेगा।

ख) आचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक छात्र-छात्रा अपने आवेदन पत्र में मुख्य विषय के चयन हेतु प्राथमिकता के क्रम से विषयों का उल्लेख करेंगे।

सेतु परीक्षा

1. जिस छात्र/छात्रा ने पूर्व में संस्कृत विषय नहीं लिया है वह छात्र/छात्राओं शास्त्री प्रतिष्ठा/(B.A. Honours) कक्षा में प्रवेश ले सकते हैं। लेकिन उन विद्यार्थियों को सेतु परीक्षा का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
2. जिस छात्र/छात्राओं के पास स्नातक (B.A.) कक्षा में संस्कृत नहीं है वह छात्र/छात्रा आचार्य कक्षा में प्रवेश ले सकते हैं। लेकिन उन विद्यार्थियों को सेतु परीक्षा का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
3. इस सेतु परीक्षा में शास्त्री प्रतिष्ठा/आचार्य कक्षा के अभ्यर्थी/छात्र को छः विषयों/पत्रों का षाण्मासिक पाठ्यक्रम का अध्ययन कर परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
4. परीक्षा उत्तीर्ण करने वाला छात्र/छात्रा ही शास्त्री प्रतिष्ठा/आचार्य के प्रथम सत्रार्द्ध की परीक्षा दे सकेंगे।
5. सेतु पाठ्यक्रम में सामान्य संस्कृत ज्ञान, व्यवहारिक सम्भाषण, संस्कृत साहित्य का ज्ञान, संस्कृत व्याकरण, श्लोकोच्चारण आदि का अध्ययन अनिवार्य होगा।
6. सेतु पाठ्यक्रम में क्रमशः निम्नलिखित पत्रों का अध्ययन होगा :-

क) प्रथम पत्र	-	व्याकरण
ख) द्वितीय पत्र	-	भाषा-प्रवेश
ग) तृतीय पत्र	-	पद्य साहित्य
घ) चतुर्थ पत्र	-	गीता एवं नाटकम्

ङ) पञ्चम पत्र - भाषा कौशल विकास

च) षष्ठ पत्र - कथा साहित्यम्

7. सेतु परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र का ही शास्त्री प्रतिष्ठा /आचार्य के सत्रार्द्ध परीक्षा का परिणाम घोषित किया जाएगा ।
8. सेतु परीक्षा में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी का नामांकन निरस्त कर दिया जाएगा व शास्त्री प्रतिष्ठा/आचार्य परीक्षा में भी बैठने नहीं दिया जाएगा ।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. योग (एकवर्षीय)
2. ज्योतिष (एकवर्षीय)
3. कर्मकाण्ड (एकवर्षीय)
4. वेद (एकवर्षीय)
5. वास्तु (एकवर्षीय)
6. आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
7. भाषा-प्रशिक्षण (एकवर्षीय)
8. कर्मकाण्ड/ पौरोहित्य (एकवर्षीय)
9. वैदिकगणित (एकवर्षीय)

विशेष :

I. अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रवेश-अर्हता योग्यता के अनुसार वरीयता-सूची के आधार पर साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा।

II. योग की प्रायोगिक-कक्षाएं प्रातः 6.30 से 9.30 तक होंगी तथा दो दिन सैद्धांतिक-कक्षाएं होंगी ।

III. किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश-हेतु बाह्य-अभ्यर्थियों एवं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं से एक समान प्रवेश-शुल्क लिया जाएगा।

IV. परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु छात्र/छात्रा की प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक कक्षा में कम से कम 70% उपस्थिति अनिवार्य होगी।

V. अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट-छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा अंशकालिक-पाठ्यक्रमों को संचालित करने हेतु समय-समय पर निर्धारित-नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा। किसी नियम की अस्पष्टता या नए नियम की आवश्यकता की स्थिति में कुलपति का निर्णय प्रभावी होगा।

VI. जिन अंशकालिक-पाठ्यक्रमों में प्रवेश-हेतु आवेदकों की संख्या 10 से कम हो, तो उस पाठ्यक्रम को इस सत्र में संचालित नहीं किया जाएगा ।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल

10. शैक्षणिक कैलेण्डर (Academic Calendar, 2023-24)

FOR UNDER-GRADUATE/DIPLOMA COURSES

EVENT	DURATION
Admissions	01.06.2023 to 15.07.2023
ODD SEMESTER	
1st Teaching Term	16.07.2023 to 09.11.2023
Vacations (Diwali)	10.11.2023 to 16.11.2023
2nd Teaching Term	17.11.2023 to 24.11.2023
Examinations	25.11.2023 to 23.12.2023
Winter Vacations	24.12.2023 to 31.12.2023
EVEN SEMESTER	
1st Teaching Term	01.01.2024 to 22.03.2024
Vacations (Holi)	23.03.2024 to 31.03.2024
2nd Teaching Term	01.04.2024 to 30.04.2024
Examinations	01.05.2024 to 30.05.2024
Summer Vacations	01.06.2024 to 30.06.2024

FOR POSTGRADUATE COURSES

EVENT	DURATION
Admissions	01.06.2023 to 15.07.2023
ODD SEMESTER	
1st Teaching Term	16.07.2023 to 09.11.2023
Vacations (Diwali)	10.11.2023 to 16.11.2023
2nd Teaching Term	17.11.2023 to 06.12.2023
Examinations	07.12.2023 to 23.12.2023
Winter Vacations	24.12.2023 to 31.12.2023
EVEN SEMESTER	
1st Teaching Term	01.01.2024 to 22.03.2024
Vacations (Holi)	23.03.2024 to 31.03.2024
2nd Teaching Term	01.04.2024 to 30.04.2024
Examinations	01.05.2024 to 30.05.2024
Summer Vacations	01.06.2024 to 30.06.2024

***Examinations of each class will be completed within 25-30 days and the evaluation of Answer Books, etc. will be got done in remaining days and Vacations.**

Note:

- **The next Academic session 2024-25 will start from 01/07/2024**
- **The Classes will be commenced w.e.f. 16.07.2023 for Undergraduate courses and Post-Graduate Courses.**
- **Admission to 3rd, 5th, 7th, 9th Semester, wherever applicable, of U.G. Programmes including integrated/diploma Programmes will be done upto 16.07.2023 and their classes will start from 16.07.2023 .**
- **If the number of teaching days falls less than 180 days (90 days in each semester) in the academic session 2023-24 due to some unforeseen reasons, it would be the responsibility of each Department/Institute/College to make good the loss by arranging extra classes.**

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

w.e.f. 01.06.2023

प्रवेश प्रकिया प्रारम्भ

सत्र 2023-24

आचार्य (एम.ए.)

वेद	दर्शन
व्याकरण	धर्मशास्त्र
ज्योतिष	योग (M.A.)
साहित्य	हिन्दू अध्ययन (M.A.)

शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honors) चार वर्षीय (NEP 2020)

वेद	दर्शन
व्याकरण	धर्मशास्त्र
ज्योतिष	योग
साहित्य	

अंशकालीन पाठ्यक्रम (डिप्लोमा)

योग

आयुर्वेद

ज्योतिष

वास्तुशास्त्र

संस्कृत भाषा दक्षता

वैदिक-गणित

वेद

पौरोहित्य (कर्मकाण्ड)

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम ।
- क्षमता सम्वर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- कौशल सम्वर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन ।
- मूल्य योजना पाठ्यक्रमों का समावेश ।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषयों का भी पाठ्यक्रम ।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय ।
- शास्त्री प्रतिष्ठा करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का भी सुनहरा अवसर
- भारतीय सेना में धर्म शिक्षक (R.T./J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर ।
- चिकित्सा (द्विवर्षीय आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना–तकनीक)

विशेष

विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास एवं भोजनालय की व्यवस्था भी उपलब्ध है ।

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करेः–

वेबसाइटः– www.mvsu.ac.in संपर्क–सूत्र– 93500–45366

डिप्लोमा

आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
शुल्क 10,000/– (प्रति वर्ष)

अन्य डिप्लोमा (एकवर्षीय)
शुल्क 6,000/–

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें

कार्यालय परिसर– डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय

जगदीशपुरा (अम्बाला रोड़, कैथल– 136027) एवं

नूतन परिसर– महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल,हरियाणा

टीक परिसर. करुक्षेत्र रोड. टीक